अनिता रश्मि

छत गायब

ई-मेल-anitarashmi2@gmail.com

सुटेड-बूटेड, टाईधारी यात्री को स्टेशन पहुँचने में देर हो गई। ट्रेन बस खुलने ही वाली थी। उसने ट्रेन छूटने की आशंका में मुँह घुमाकर खड़े उस लाल वर्दी को बिन देखे, बिन मोल-भाव किए सामान उठाने का ऑर्डर दिया, "जल्दी ले चलो जी। ट्रेन नहीं छूटनी चाहिए।"

वह बारम्बार ट्रेन की ओर देखते हुए ऊपर घड़ी पर भी निगाहें डाल लेता। कल उसे हर हाल में दिल्ली पहुँचना था। वहाँ से आगे मंजिल की ओर फ्लाइट से। लंदन से आया लेटर जैसे उसकी आँखों के सामने लहरा रहा था। उसकी बेचैन आँखें कहीं टिक नहीं रही थीं।

दोनों लगभग दौड़ते हुए बोगी तक पहुँचे। ट्रेन की सीटी देने से पूर्व लाल वर्दी ने बर्थ के नीचे-ऊपर सारे सामान जमा दिए। दो वी.आई.पी. बर्थ के नीचे, उसके पास ही एक बड़ा सफारी बैग। बर्थ के ऊपर एक बड़ा-सा चमड़े का बैग, एक खाने से भरा थैला और थर्मस। तब तक यात्री पर्स के पैसे गिनने में व्यस्त हो गया था। गाड़ी कभी भी खुल सकती थी। लाल मैली वर्दी ने अपनी झुकी पीठ सीधी की।

"कितने हुए?"

"बेटा! रहने दो। इस जनम में नहीं चुका पाओगे।"

यात्री उसकी आवाज से चौंका। उसके सामने वह दिन मूर्तिमान, जब उसने कुली को अपने आलीशान बंगले के बाहर निकाल दिया था। कुली शब्द सी.ओ. बनते ही घन की तरह उसके माथे पर वार करने लगा था। सोचता, पिता शर्म की बड़ी वजह बन जाएँगे। वह अनेक बच्चों की तरह गीले बिस्तर, नींद व खाली पेट के गणित और पिता के अथक-अकथ मेहनत को भूल चुका था। आदतन मुँह से निकला—"बाबा!" लेकिन चलते ही ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली। लाल वर्दी रेल से उतर चुकी थी।

"तुम्हारा शुरू हुआ है लेकिन हमारा यातरा अभी खतम कहाँ हुआ बेटा।" उसके कानों में गूँज रहा था।

अनिता रश्मि

सबला

वह सवेरे-सवेरे घर के सात लोगों के लिए खाना तैयार करने के बाद काम पर आ चुकी थी, नित्य की भाँति। तब से जूझ रही थी चुपचाप। सूरज का ताप बढ़ रहा था कि सामने शामियाने से घिरे मैदान में चमचमाती कुर्सियों पर चमचमाते वस्त्रवाले लोग जमने लगे । स्टेज की चमचमाहट अलग छटा बिखेर रही थी। पंखे की हवा अपना धर्म निबाह रही थी। उसने एक निगाह डाली। फिर व्यस्त पूर्ववत्। उसे कल तक काम खत्म करना था। स्टेज थोड़ी देर में वक्ताओं, मुख्य अतिथियों, अध्यक्ष से सज चुका था। पर उसे क्या। वह ललाट, गाल और नाक की दाईं ओर गिलट की लौंग तक बह आए पसीने को पोंछ पूर्ववत काम से जूझती रही। ठंडा और नाश्ते की प्लेटें खाली कर मुख्य वक्ता बाहर निकले। वे सफल वक्ता थे। महिला विषयक जानकारियों और सुधारों का बड़ा नाम। स्त्री मुक्ति के प्रमुख पैरोकार माने जाते थे। न जाने कितनी अबलाओं के उद्धारक। निकलते ही वक्ता ने सामने पड़ गई महिला को ठिठककर देखा। उन्हें अपना सद्य: पढ़ा गया वक्तव्य याद आ गया। तभी उस स्त्री की निगाहें उठीं। उन पर गिरीं। वहाँ उपालंभ, "का...का...देख रहे हयँ?" नहीं कहा स्त्री ने। बस, उसकी आँखें आबद्ध। चूड़ियों-भरे हाथ का हथौड़ा पुनः उठा और पत्थर का बड़ा टुकड़ा चार भागों में बँटकर बिखर गया। तत्काल वक्ता की निगाहें नीचीं। वे भरी दोपहर में पत्थर तोड़, ढेर लगा देनेवाली सलेटी धूल से सनी अबला स्त्री से आँखें मिला नहीं सके।

फिक्रमंद

प्रिय दिवा, स्नेहसिक्त प्यार!

आज जब मैं और पापा तुम्हें हैदराबाद छोड़कर लौट आए हैं, हमारा मन विचलित है। खाली घर काट खाने को दौड़ रहा है तुम्हारे बिन...। घर का सूनापन हमसे सहा नहीं जा रहा। लेकिन हम समझते हैं, तुम्हारे बेहतर भविष्य के लिए तुम्हें उक्त संस्थान में दाखिला दिलाना जरूरी था। बेटे, एक बात से आगाह करना चाहती हूँ। वहाँ हर जगह देखा था। फिर भी तत्काल कह न सकी थी। बेटियाँ पता नहीं क्यों, अपने को अनावृत्त कर खुश-संतुष्ट हो रही हैं। वे क्या सिद्ध करने के लिए उद्यत हैं, मैं समझ नहीं पा रही हूँ। मैं तुमसे उम्मीद रखती हूँ, तुम भूलकर भी उस हवा का हिस्सा नहीं बनोगी, जो उलटी विनाशक बयार बन जाती है। आज लड़कियाँ भौंरों को खुद आकर्षित कर रही हैं। फैशन से ललचाकर अनर्थ को आमंत्रित करना कहाँ की बुद्धिमानी है? जानती हूँ, आज की पीढ़ी को उपदेश बर्दाश्त नहीं होता। पर यह उपदेश नहीं है। मत भूलना, स्त्रियाँ पर्दे में ज्यादा आकर्षक लगती हैं। सच्ची स्त्री स्वतंत्रता, अस्मिता-वजूद की रक्षा की शिक्षा तुम्हें घर में मिल चुकी है। मैंने भी ऑक्सफोर्ड विद्यालय से उच्चतम शिक्षा प्राप्त की थी न? बाद में बड़े विदेशी संस्थान में नौकरी भी की न? मुझे वहाँ कभी देह उघारू ड्रेस की जरूरत नहीं पड़ी। 'आ बैल मुझे मार' से बचना पहली जरूरत है बेटा। आज की हो तुम, हमसे ज्यादा समझदार। इशारा काफी है तुम्हारे लिए।

शुभचिंतक

तुम्हारी मम्मा